**पाठ 1** **सितम्बर 29-अक्टूबर 5**

## सृष्टि और पतन

**सब्त अपराह्न** **सितम्बर 29**

**इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें** : उत्प० 1: 26-27;1 यूहन्ना 4: 7-8 16; उत्प० 3: 16-19; उत्प० 11: 1-9; व्यवस्था वि० 7: 6-11 ।

याद वचन: *"और उसने उसको बाहर ले जा के कहा, आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या तू उनको गिन सकता है?' फिर उसने उससे कहा, "तेरा वंश ऐसा ही होगा।" उसने यहोवा पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना" उत्प० 15: 5-6।"*

परमेश्वर के लोगों की कहानी मनुष्यों की सृष्टि और पाप में उनके दुखद पतन से शुरू होती है। कलीसिया में एकता के स्वभाव (प्रकृति) को समझने की कोई भी कोशिश सृष्टि में परमेश्वर की असल योजना और तब पतन के बाद पुनर्स्थापन के साथ शुरू होनी चाहिए।

बाईबल के प्रथम अध्याय प्रकट करते हैं कि परमेश्वर का इरादा मानवता के लिए एक परिवार में बने रहना था। दुर्भाग्यवश यह एकता पाप आने के बाद टूट गई। पाप ही में अनेकता एवं विभाजन की जड़ें उगने लगीं, इससे बढ़कर आज्ञा न मानने के दुष्परिणाम देखे जाने लगे। आदम और हवा के तत्काल बातचीत में हम इस विभाजन के नमूने को पाते हैं जब परमेश्वर पहली बार, उनके वर्जित पेड़ में से खाने के बाद उनसे मुलाकात करता है। (देखें उत्प० 3: 11)। इस कारण सभों के लिये उद्धार की यह योजना पूरी होगी, पुनर्स्थापन की यह मूल एकता निर्णायक लक्ष्य में से एक है।

परमेश्वर के लोगों का पूर्वज, अब्राहम, परमेश्वर के उद्धार की योजना में मुख्य भूमिका निभाने वाला बना। पवित्र शास्त्र में अब्राहम "विश्वास द्वारा धार्मिकता" का बड़ा उदाहरण बतलाया जाता है (देखें रोम० 4: 1-5)। वैसा विश्वास जो परमेश्वर के लोगों को एक साथ जोड़ता है। परमेश्वर लोगों द्वारा एकता की पुनर्स्थापन हेतु कार्य करता है और खोये हुए लोगों को अपनी इच्छा बतलाता है।

**रविवार** **सितम्बर 30**

एकता की नींव के रूप में प्रेम

उत्पत्ति 1 एवं 2 में सृष्टि की कहानी से जो स्पष्ट संवाद परिलक्षित

---

* सब्त, अक्टूबर 6 की तैयारी के लिये इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

होता है वह सृष्टि के सप्ताह के अंत में मौजूद है। परमेश्वर के अंतिम वचन कि सब कुछ "बहुत सुन्दर है" (उत्प० 1: 31) सुंदरता ही का उल्लेख नहीं करता वरन पाप रहित सृष्टि को इंगित करता है, जब परमेश्वर ने संसार की सृष्टि पूरी की और मनुष्य जो इसमें वास करने वाला था। सृष्टि में परमेश्वर का मूल उद्देश्य सभी जीवों के साथ सामंजस्यपूर्ण सह अस्तित्व और अंतर-निर्भरता का संबंध शामिल था। यह मानव परिवार के लिए सृजित सुंदर संसार था। सब कुछ सिद्ध और इसके सृष्टिकर्त्ता के योग्य था।

संसार के लिये परमेश्वर का मूल एवं आदर्श उद्देश्य मेल, एकता एवं प्रेम था।

पढ़ें उत्प० 1: 26-27, ये पदस्थल उत्प० 1 एवं 2 में वर्णित बाकी सांसारिक सृष्टि के विपरीत मनुष्य की विशिष्ठता के विषय क्या सिखलाते हैं?

_____

_____

_____

उत्पत्ति की कहानी बतलाती है कि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में सृजा उत्पत्ति में किसी अन्य के लिये ऐसा कुछ नहीं कहा गया। "फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ... तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया। नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की" (उत्प० 1: 26-27)। हालांकि इस स्वरूप के वास्ताविक स्वभाव के विषय में धर्मविज्ञानियों ने सदियों से बहस की है, साथ ही साथ स्वयं परमेश्वर के स्वभाव पर भी चर्चा होती रही है, पवित्रशास्त्र के बहुत से अध्याय परमेश्वर के स्वभाव को प्रेम के तौर पर पेश करते हैं।

पढ़ें 1यूहन्ना 4: 7-8, 16, यह पदस्थल हमें समझने में किस प्रकार मदद कर सकता है कि हम मूल रूप से किस प्रकार सृजे गये और सृष्टि में निहित मूल एकता को किस प्रकार प्रभावित किया है?

_____

_____

_____

परमेश्वर प्रेम है और चूँकि मनुष्य उसके स्वरूप में सृजे गये हैं, वे भी प्रेम कर सकते हैं। प्रेम दूसरों के साथ संबंध में ही अस्तित्व में रह सकता है। इस प्रकार जो कुछ भी परमेश्वर के स्वरूप में बना, प्रेम की गहराई एवं क्षमता को स्थिर करना चाहिए।

**सोमवार** **अक्टूबर 1**

**पतन के नतीजे**

पतन के नतीजे बहुत भारी थे। आदम और हवा की अवमानना (आज्ञा न मानना) सब जीवों में ससंगत अंतरनिर्भरता को बिगाड़ना शुरू कर दिया। मानवता में फूट, कलह, विभाजन शुरू हो गया और यह आज तक विद्यमान है। आदम और हवा में फूट तुरंत देखी जाने लगी जब दोनों ने पतन के लिए एक दूसरे को दोष देना शुरू किया उत्प० 3: 12-13)। तब से चीजें बदत्तर होने लगीं।

पढ़ें उत्प० 3: 16-19 एवं उत्प० 4: 1-15. इन पदस्थलों में सुन्दर पृथ्वी में जिसे परमेश्वर ने सृजा पाप और इसके प्रभाव के क्या परिणाम देखे जाते हैं ?

_____

_____

आदम का आज्ञा न मानना बहुत सी घटनाओं एवं परिणामों का कारण बना जो परमेश्वर की सृष्टि में समय-समय पर देखा जाने लगा। प्राकृतिक जगत भी इन परिणामों से प्रभावित हुआ। मानव संबंध प्रभावित हुआ। कैन और हाबिल एक दूसरे से प्रेम करने की बजाय एक दूसरे के दुश्मन बने। एक ने परमेश्वर की उपासना करना छोड़ अपनी इच्छाओं पर चलना चाहा। यह मनमुटाव हिंसा और मृत्यु का कारण बना। फिर भी कैन की प्रतिक्रिया हाबिल से बढ़कर परमेश्वर के प्रति अधिक थी। वह परमेश्वर के प्रति क्रोधित हुआ (उत्प० 4: 5), और यह क्रोध हाबिल पर भड़का। आज्ञा न मानना मनुष्य के संबंधों में अलगाव पैदा करने का कारण बना।

"यहोवा ने देखा कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है वह निरन्तर बुरा ही होता है" (उत्प० 6: 5)। इस बुराई के परिणाम स्वरूप बाढ़ आई और इसने परमेश्वर की मूल सृष्टि को नष्ट कर डाला। लेकिन फिर भी परमेश्वर ने मनुष्य को नहीं छोड़ा उसने नूह एवं उसके परिवार से पुन: शुरूआत की।

बाढ़ के बाद परमेश्वर ने नूह एवं उसके परिवार को एक प्रतिज्ञा दी। आसमान में इन्द्रधनुष हमेशा उसकी परवाह एवं प्रतिज्ञाओं, दया और अनुग्रह की याद दिलायेगा (उत्प० 9: 12-17, यशा० 54: 7-10)। परमेश्वर ने नूह के साथ एक वाचा बांधी और अपनी मूल योजना की शुरूआत की कि एक संगठित परिवार रहे, जो उसके एवं उसके वचन के प्रति विश्वास योग्य रहें।

पाप किस प्रकार अलगाव लाता है? एकता बनाए रखने के लिये उनके बीच में इस वक्त आप कौन से चुनाव कर सकते हैं, जिनके बीच में आपके चुनाव सशक्त ढंग से काम करेंगे?

**मंगलवार** **अक्टूबर 2**

**अधिक फूट और अलगाव**

पढ़ें उत्प० 11:1-9, यहाँ पर क्या हुआ जो अलगाव और फूट की समस्या को बदत्तर बनाता है?

_____

_____

दूसरी घटनाएँ जो बाईबल द्वारा जल प्रलय के बाद बतलाई गई है, वे हैं बाबेल का गुम्मट, भाषाओं में गड़बड़ी और तब लोगों का अलग होना जो अब तक एक ही भाषा बोलते थे। संभवता महानद और टाइग्रिस नदियों के बीच की सुंदर भूमि और उपजाऊ मिट्टी से आकर्षित होकर नूह के कुछ वंशजों ने शिनार की भूमि में जो आज का दक्षिण इराक है, स्वयं के लिये ऊँचे गुम्मट और शहर बनाने का निर्णय लिया (उत्प० 11:2)।

पुरातात्विक खोज ने दिखाया है कि मेसोपोटामिया प्रारंभिक ऐतिहासिक काल से घनी आबादी वाला क्षेत्र रहा था। इनमें से सुमेरियन लोग भी थे जिन्हें मिट्टी की पट्टियों में लिखने की कला ईजाद करने का श्रेय जाता है। उन्होंने सुन्दर घर बनाये और जेवरात, औजार, एवं घरेलू-उपयोग की वस्तुएँ बनाने में महारत हासिल की। खुदाई से पता चला है कि वहाँ पर बहुत से गुंबद जैसे आकार के मंदिर थे जिन्हें अनेक देवी देवताओं की उपासना हेतु समर्पित किया गया था।

नूह के वंशज जो शिनार देश में बस गये थे, शीघ्र ही नूह के परमेश्वर और जल प्रलय द्वारा संसार को पुनः नाश न करने की प्रतिज्ञा को भूल गये। बाबेल के गुम्मट का निर्माण उनके उच्चत्तर ज्ञान और कौशल की मिसाल था। इस बड़े निर्माण के पीछे उन्हें नाम और प्रसिद्धि की इच्छा थी "हम अपना नाम करें"(उत्प० 11:4)। "ईश्वरीय उद्देश्यानुसार मनुष्यों को सच्चे धर्म के बंधन से एकता को कायम रखना था। जब मूर्तिपूजा और अनेक देवताओं में विश्वास ने आंतरिक आत्मिक बंधन को तोड़ा, उन्होंने धार्मिक एकता ही को नहीं खोया पर भाईचारे की भावना भी समाप्त हो गई। गुम्मट के समान परियोजना जो बाहरी बचाव के लिये थी, जिसने आंतरिक एकता खो दी थी, सफल कभी नहीं हो सकती थी।"

The SDA Bible Commentary, Vol. 1 pp. 284, 285.

आदम और हवा के पतन ने मानव जाति और परमेश्वर की मूल योजना की एकता को तोड़ दिया। इसके परिणाम स्वरूप संसार में उपासना से संबंधित गड़बड़ी और बुराई और अनैतिकता बड़े पैमाने पर फैलने लगी। आखिरकार संस्कृति, भाषा, और जातियों में लोगों का विभाजन होने लगा।

कौन से व्यवहारिक कदम हो सकते हैं, जिनसे हम जाति, संस्कृति और भाषा के विभाजन द्वारा कलीसिया में हुए जख्म को ठीक कर सकते हैं ?

**बुधवार** **अक्टूबर 3**

**अब्राहम, परमेश्वर के लोगों का पिता**

विश्व के तीन बड़े धर्म यहूदी, ईसाई एवं इस्लाम, अब्राहम को अपने पूर्वज के तौर पर देखते हैं। मसीहियों के लिए यह समूह एक आत्मिक संबंध है। जब अब्राहम को अपना देश मेसोपोटामिया छोड़ने को कहा गया, उसे कहा गया कि "भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशिष पाएँगे" (उत्प० 12:3, उत्प० 18:18, 22:18 को भी देखें). आशिष यीशु के द्वारा आई।

पढ़ें इब्री० 11:8-19, रोम० 4:1-3, एवं गलाति 3:29. अब्राहम के विश्वास के कौन-से सिद्धान्तों का इन पदस्थलों में उल्लेख मिलता है, और मसीही एकता के विचार से ये किस प्रकार संबंध होते हैं? यह कि इन पदस्थलों में क्या पाया जा सकता है जो यह समझने में हमें मदद करे कि मसीही एकता के लिये निर्णायक अवयव क्या होना चाहिए?

_____

_____

_____

सभी विश्वासियों के पिता के तौर पर अब्राहम हमें मसीही एकता को केन्द्र मान कर कुछ मूल भूत शिक्षा देता है।

**पहला** - वह आज्ञाकरी बना। "विश्वास ही से अब्राहम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे मीरास में लेने वाला था; और यह न जानता था कि मैं किधर जाता हूँ" (इब्रा० 11:8)।

**दूसरा** - उसे परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा था। "विश्वास ही से उसने प्रतिज्ञा किए हुए देश में, पराए देश में परदेशी के समान, रहकर इसहाक और याकूब समेत, जो उसके साथ उसी प्रतिज्ञा के वारिस थे, तम्बुओं में वास किया। क्योंकि वह उस स्थिर नींव वाले नगर की बाट जोहता था, जिसका रचने वाला और बनाने वाला परमेश्वर है" (इब्रा० 11:9-10)।

**तीसरा** - उसने विश्वास किया कि परमेश्वर उसे एक पुत्र देगा और एक दिन

उसके वंशज तारों के समान असंख्य होंगे। इस प्रत्युत्तर के आधार पर परमेश्वर ने उसे विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया (रोम० 4:1-3)।

**चौथा** - उसने परमेश्वर की उद्धार की योजना में भरोसा किया। अब्राहम के विश्वास की महान परख तब हुई जब परमेश्वर ने मोरियह पहाड़ पर इसहाक को बलिदान स्वरूप मांगा (उत्प० 22:1-19, इब्रा० 11:17-19)।

पुराना नियम अब्राहम को परमेश्वर के मित्र के रूप में पेश करता है (2इति० 20:7, यशा० 41:8)। उसका विश्वस्त जीवन उसकी आज्ञाकारिता, और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर उसका विश्वास उसे हमारे मसीही जीवन के लिए एक नमूना बनाता है।

बीते कुछ दिनों के दौरान आपके वचनों और कर्मों पर चिंतन करें। आप कैसे सुनिश्चित करेंगे कि जो कुछ भी आप बोलते हैं या करते हैं उससे आप के विश्वास की वास्तविकता झलकती है?

**बृहस्पतिवार** **अक्टूबर 4**

**परमेश्वर के चुने हुए लोग**

अब्राहम का अपने सेवक के रूप में बुलाये जाने के द्वारा परमेश्वर ने अपने लिये लोगों को चुना जो संसार पर उसका प्रतिनिधित्व करें। यह बुलाहट और चुनाव परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह का एक कार्य था। परमेश्वर की इस्राएल को बुलाहट, पतन के द्वारा विनाश और फूट के बाद समस्त मानव के पुनर्स्थापन हेतु उसकी योजना का केन्द्र बिन्दु था। पवित्र इतिहास इस पुनर्स्थापन की ओर परमेश्वर के कार्य का अध्ययन है और उस योजना का खास घटक इस्राएल एक वाचा राष्ट्र था।

व्यवस्थाविवरण 7:6-11 के अनुसार परमेश्वर ने इस्राएल को उसके लोग क्यों पुकारा? उसने अब्राहम के वंशजों को अपने लोगों के तौर पर क्यों चुना ?

मानवता के लिये परमेश्वर का प्रेम, इस्राएल को अपने लोगों के तौर पर चुनाव के केन्द्र पर है। परमेश्वर ने एक वाचा अब्राहम और उसके वंशजों के बीच बाँधी ताकि परमेश्वर के ज्ञान को उसके लोगों के द्वारा सुरक्षित रखा जा सके और मानवता का उद्धार हो सके (भजन सं० 67:2)। यह प्रेम का उच्चतर कार्य है जिसके द्वारा परमेश्वर ने इस्राएल को चुना। परमेश्वर के प्रेम का दावा करने के लिए अब्राहम के वंशजों के पास घमंड करने के लिए कुछ नहीं था। "यहोवा ने जो तुम से स्नेह करके तुम को चुन लिया, इसका कारण यह नहीं था कि तुम गिनती में और सब देशों

के लोगों से अधिक थे, किन्तु तुम तो सब देशों के लोगों से गिनती में थोड़े थे" (व्यवस्था० 7: 7)।

यह मूल्यों का विचित्र बदलाव है जिसे परमेश्वर अपने लोगों को चुनने में व्यवहार करता है। जब कि लोग अगुवों के चुनाव में ताकत, बुद्धि, और आत्म-विश्वास को देखते हैं। परमेश्वर अपनी सेवा के लिए शक्तिशाली लोगों को नहीं चुनता है वरन उन्हें चुनता है जो अपनी कमजोरी निर्बुद्धि, और खालीपन को स्वीकारते हैं, ताकि कोई उसके सामने घमंड न करे (1कुरि० 1: 26-31)।

फिर भी उनके सौभाग्य को देखें: "परमेश्वर, उसके लोगों इस्राएल को प्रशंसा और महिमा में देखना चाहता था। हरेक आत्मिक लाभ उन्हें दिया गया। परमेश्वर ने उनके चरित्र निर्माण में किसी चीज की घटी नहीं होने दी, जो उन्हें उसका प्रतिनिधि बना सकता था।

"परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति उनकी आज्ञाकारिता उन्हें संसार के राष्ट्रों के सामने उन्हें सुख-समृद्धि से भर सकता था। वह जो सब कामों में उन्हें ज्ञान और दक्षता दे सकता था, उनका गुरु होता, और अपनी आज्ञा मानने के द्वारा वह उन्हें नम्र और ऊँचा पद दे सकता था। यदि आज्ञाकारी होते तो वे दूसरे देशों में हो रही, बिमारियों से बच सकते थे और ज्ञान के उत्साह से आशीषित होते। परमेश्वर की महिमा, उसका प्रभाव और सामर्थ उनकी समृद्धि में प्रकट होती। वे याजकों और राजकुमारों के राज्य होते। परमेश्वर ने उन्हें हर सुविधा से सुसज्जित किया ताकि वे संसार में महानतम राष्ट्र बने।"

परमेश्वर ने प्राचीन इस्राएल के लिये क्या किया और अपने बुलाहट के बीच हम कौन-सी समानता पाते हैं। उसने हमारे लिये क्या किया और सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट के तौर पर उसकी बुलाहट हमारे लिये क्या मायने रखती है? सब्त के दिन अपने जवाबों के साथ कक्षा में आएँ।

**शुक्रवार** **अक्टूबर 5**

**अतिरिक्त विचार:** Ellen G . White, "The Creation, " pp. 44-51, and "The call of Abraham," pp. 125-131, in Patriarchs and Prophets.

मनुष्य की सृष्टि में परमेश्वर का असल उद्देश्य परिवार और सब्त के गठन में भी प्रतिविम्बित होता है (उत्प० 2: 21-24)। सब्त समस्त मानव जाति के लिये था, जैसा यीशु ने मार्क 2: 27-28 में स्पष्ट संकेत दिया। वास्तव में इसका विश्वव्यापी स्वभाव उत्पत्ति की कहानी में पाया जाता है, जब परमेश्वर ने सब्त को अलग किया। यह कार्य इस्राएल को अपनी वाचा के लोगों के तौर पर बुलाने से ठीक पहले ही नहीं वरन पाप की शुरूआत से भी

पहले हो चुका था। सब्त शक्ति से भरपूर ऊर्जा होता यदि सब लोग इसे मानते। यह विश्राम का दिन था जिसे परमेश्वर ने आदम और हवा की संतानों को उसके साथ एक सामान्य बंधन (संबंध) के तौर पर याद दिलाने के लिये दिया। "सब्त और परिवार का गठन एदेन में एक समान हुआ, और परमेश्वर की योजना में स्थिर रूप से ये एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं। परिवार के सदस्यों के लिये यह परमेश्वर की योजना थी कि काम और अध्ययन में, उपासना और मनोरंजन में, पिता अपने परिवार में याजक के तौर पर और माता-पिता दोनों अपने बच्चों के शिक्षक और साथी के तौर पर जुड़े रहे।"–

Ellen G. White, Child Guidance, P. 535-

**विचार-विमर्श के लिये प्रश्न:**

1. उत्पत्ति की कहानी में हवा का आदम की पसली में से सृष्टि, पति-पत्नी के बीच अंतरंग संबंध को किस प्रकार प्रकट करता है? वह हमें क्या बतलाता है कि क्यों संपूर्ण बाईबल में परमेश्वर अपने साथ नजदीकी संबंध को बतलाने के लिये पति-पत्नी के अंतरंग (घनिष्ट) संबंध का उदाहरण देता है?
2. यद्यपि बाबेल के गुम्मट की कहानी बतलाती है कि मनुष्य की जातीयता और भाषा विभिन्नता मानवता के लिये परमेश्वर की मूल योजना नहीं थी। ऐसे प्राकृतिक विभाजन को आज हम कैसे तोड़ सकते हैं ? विभिन्न राष्ट्र और भाषाओं के बावजूद आज हम किस प्रकार कलीसिया में एकता और समरसता का अनुभव करेंगे ?
3. प्राचीन इस्राएल और हम सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्टों के लिए बुलाहट के बीच कौन-सी समानताएँ हैं ? अधिक महत्त्वपूर्ण यह कि उनसे हम क्या शिक्षा ले सकते हैं जो ईश्वरीय पुकार के प्रति हमें विश्वस्त होने में मदद करे।

**सारांश :-** सृष्टि में परमेश्वर की मूल योजना मानवता के लिए एकता एवं समरसता के साथ एक परिवार के समान रहना था। हमारे आदि माता-पिता की अवमानना ने परमेश्वर की योजना में व्यवधान पैदा किया। फिर भी परमेश्वर ने अब्राहम को लोगों को स्थिर करने को कहा जिनके द्वारा वह पुन:स्थापन की प्रतिज्ञा को जीवित रख सके जो केवल मसीह में उपलब्ध है।